प्रयोग क्रमांक – 3

पृष्ठोन्मुखी अवरोध स्मृति

भूमिका :– स्मृति का अर्थ

स्मृति एक सामान्य पद है जिसका तात्पर्य पूर्व अनुभूतियाँ मस्तिष्क में इकट्ठा कर रखने की क्षमता होती है तथा इसकी समय अवधि 1 सेकण्ड से कम या सम्पूर्ण जीवनकाल भी हो सकता है। मनोविज्ञान ने स्मृति क दो पक्ष बताये हैं धनात्मक पक्ष तथा ऋणात्मक पक्ष तथा इन पक्षों के संबंध में यह कहा जाता है कि धनात्मक पक्ष स्मरण है तथा ऋणात्मक पक्ष विस्मरण है।

परिभाषाएँ :–

1. लैहमैन (1979) के अनुसार :– विशेष समय अवधि के लिए सूचनाओं को सम्बोधित करके रखना ही स्मति है।

2. बटरफिल्ड (1979) के अनुसार :– पूर्व अनूभूतियों को मस्तिष्क में जमा करके रखने की क्षमता ही स्मृति कहलाती है।

स्मृति के प्रकार :–

प्रयोगात्मक मनोविज्ञानिकों ने स्मृति के 3 प्रकारों का वर्णन किया है।

1. संवेदी स्मृति   2. लघु कालीन स्मृति   3. दीर्घ कालीन स्मृति

संवेदी स्मृति :–

संवेदी स्मृति वैसे तो स्मृति संरचना को कहा जाता है, जिससे सूचनाओं को सामान्यतः 1 सेकेण्ड या उससे कम अवधि के लिए रह पाता है।

लघुकालीन स्मृति :–

लघुकालीन स्मृति एक प्रकार का बायो–इलेक्ट्रिक प्रोसेस (Bio-Electric Prosess) है जिसका स्थायीपन अधिक से अधिक 30 होता है।

दीर्घकालीन स्मृति :–

दीर्घकालीन स्मृति में धारणा का अल्पकालीन ह्रास होता है अथवा विस्मरण कम मात्रा में होता है इस प्रकार दीर्घकालीन स्मृति किसी सूचना अथवा अनुभव का वह पुनः स्मरण है जो सीख लेने के पश्चात् कई दिनों, घंटो अथवा मिनटो तक मस्तिष्क में धारण के रूप में संचित रहती है।

विस्मरण :–

विस्मरण स्मृति का एक नकारात्मक या ऋणात्मक पक्ष है जैसे कुछ बात स्वतः स्मरण में आ जाती है परन्तु कई बाते प्रयास करने पर भी याद नहीं आती है इसका प्रमुख कारण यह है कि समयोपरांत सीखी हुई वस्तुओं को हम देखते है कि वे चेतन पटल से दूर हो जाती है इसी को विस्मरण कहते है।

विस्मरण के सिद्धांत :–

1. चिन्ह क्षीणन सिद्धांत
2. अनुप्रयोग सिद्धांत
3. सतत् समाकलन सिद्धांत
4. अवरोध सिद्धांत
5. संकेत संज्ञापन सिद्धांत

दीर्घकालीन स्मृति की विशेषताएँ :–

1. इसमें संचित सूचनाएँ कम सक्रिय होती है जो किसी घटना या कार्य पूरा हो जाने के बाद प्राप्त होती है।

2. दीर्घकालीन स्मृति में संचित सूचनाएँ मौलिक उद्दीपको से प्राप्त सूचनाओं की कापी नहीं होती है बल्कि इसमें संचित सूचनाओं का कोई संकेतीकरण संकेत के रूप में या अर्थ के रूप में व्यक्ति करता है।

समस्या :–

यह अध्ययन करना कि क्या पृष्ठोन्मुखी अवरोध के फलस्वरूप मूल अधिगम के प्रत्यावहन में कमी आयेगी।

उपकल्पना :–

यह उपलकल्पना कि जाती है कि मध्यवर्ती अधिगम के फलस्वरूप उत्पन्न पृष्ठोन्मुखी अवरोध के कारण मूल अधिगम के प्रत्यावहन में कमी आयेगी।

परिवर्त्य :–

स्वतंत्र चर – पृष्ठोन्मुखी अवरोध

परतंत्र चर – मूल अधिगम सामग्री का प्रत्यावहन

विधि एवं प्रक्रिया :– प्रयोज्य का परिचय

नाम –

उम्र –

लिंग –

शिक्षा –

प्रायोगिक सामग्री :–

10 – 10 त्रि–अक्षरो की तीन सूचियाँ A, B, C, विराम घड़ी, पेपर एवं पेन्सिल।

प्रायोगिक अभिकल्प :–

प्रस्तुत प्रयोग पृष्ठोन्मुखी अवरोध के अध्ययन हेतु किया जायेगा जो कि दो अवस्थाओं में करवाया जाएगा जिसमें प्रथम नियंत्रित अवस्था में त्रि–अक्षरों की सूची A- 2 मिनट अधिगम हेतु दी जाएगी इसके बाद 1 मिनट का विश्राम दिया जाएगा जिसके पश्चात् सूची A के त्रि–अक्षरों का प्रत्यावहन करवाया जाएगा इसके बाद प्रयोज्य को 5 मिनट का विश्राम दिया जायेगा।

इसके पश्चात् प्रयोग की दूसरी अवस्था प्रारम्भ की जाएगी जिसमें पात्र को 10 त्रि–अक्षरों की सूची B- 2 मिनट अधिगम हेतु दी जाएगी इसके बाद तुरन्त सूची C 2 मिनट अधिगम हेतु दी जाएगी जिसके तुरन्त बाद सूची B का प्रत्यावहन करवाया जाएगा, प्राप्त परिणामों के आधार पर विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात कर लिया जाएगा।

तालिका क्रमांक – 01

प्रायोगिक अभिकल्प

अवस्था	मूल अधिगम	मध्यवर्ती अधिगम	मपन
I नियंत्रित अवस्था	10 त्रि–अक्षरो की सूची A - 2 मिनट अधिगम हेतु	1 मिनट विश्राम	सूची A का मापन
II प्रायोगिक अवस्था	10 त्रि–अक्षरो की सूची B - 2 मिनट अधिगम हेतु	10 त्रि–अक्षरो की सूची C - 2 मिनट अधिगम हेतु	सूची B का मापन

प्रायोगिक नियंत्रण :–

प्रयोग प्रारम्भ करने के पूर्व तथा प्रयोग के दौरान निम्नलिखित सावधानियाँ रखी गयीः–

1. पात्र के साथ सौहद्रपूर्ण संबंध स्थापित किया गया।
2. प्रयोगशाला का वातावरण शांत रखा गया।
3. प्रकाश की उचित व्यवस्था रखी गयी।
4. पात्र के निष्पादन पर कोई टिका–टिप्पणी नहीं की गयी।
5. पात्र मनोविज्ञान का छात्र ना हो इस बात का ख्याल रखा गया।
6. प्रयोग प्रारम्भ करने के पूर्व सारी सामग्री पात्र से छुपाकर रखी गयी।
7. तीनों सूचियों में अलग–अलग त्रि–अक्षर रखे गए।

तालिका क्रमांक – 02

अवलोकन सारणी (नियंत्रित अवस्था)

क्रं.	सूची A	पात्र द्वारा दिया गया प्रत्युत्तर	परिणाम	कुल सही हल
1	LGM			
2	HPS			
3	TRW			
4	XYO			
5	PCZ			
6	JPZ			
7	XON			
8	RZA			
9	DQS			
10	CBA			

तालिका क्रमांक – 03

अवलोकन सारणी (प्रायोगिक अवस्था)

क्रं.	सूची B	पात्र द्वारा दिया गया प्रत्युत्तर	परिणाम	कुल सही हल
1	TRA			
2	QPS			
3	HBH			
4	TMP			
5	XLA			
6	BWO			
7	ZER			
8	PRA			
9	SQL			
10	REN			

प्रायोगिक निर्देश :–

प्रयोग प्रारंभ करने के पूर्व पात्र को निम्नलिखित निर्देश दिए गए:– देखिए मैं आपके साथ एक साधारण–सा प्रयोग करने जा रही/रहा हूँ, जिसकी सफलता आपके सहयोग पर निर्भर करती है। अतः आप मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुने एवं निर्देशां का पालन करने का प्रयास करें।

आपको इस प्रयोग में दो अवस्थाओं में कार्य करवाया जाएगा। पहली अवस्था में आपको कुछ त्रि–अक्षरों की सूची A 2 मिनट अधिगम हेतु दी जायेगी तथा इसके बाद 1 मिनट का विश्राम दिया जायेगा। विश्राम के पश्चात् याद किए त्रि–अक्षरो का प्रत्यावहन करवाया जाएगा, इसके बाद आपको 5 मिनट का विश्राम दिया जाएगा तथा प्रयोग की दूसरी अवस्था प्रारम्भ की जाएगी इसमें भी आपको कुछ त्रि–अक्षरों की सूची B दो मिनट अधिगम हेतु दी जाएगी। इसके बाद आपको सूची C दो मिनट अधिगम हेतु दी जाएगी तथा सूची का प्रत्यावहन करवाया जाएगा।

यदि प्रयोग संबंधी कोई भी बात आपको समझ में ना आई हो तो आप बेहिचक होकर पूछ सकते है।

प्रायोगिक प्रक्रिया :–

प्रस्तुत प्रयोग पृष्ठोन्मुखी अवरोध के अध्ययन हेतु किया गया प्रयोगशाला का वातावरण शांत रखते हुए पात्र के साथ सौहद्रपूर्ण संबंध स्थापित किए गए, पात्र को आरामपूर्वक बैठाकर सभी निर्देश बता दिए गए तथा प्रयोग प्रारम्भ किया गया।

प्रयोग की प्रथम अवस्था में पात्र को 10 त्रि–अक्षरो की सूची A दो मिनट अधिगम हेतु दी गयी उसके बाद 1 मिनट का विश्राम देकर सूची A के याद किए गए त्रि–अक्षरो का प्रत्यावहन करवाया गया इसके पश्चात् पात्र को 5 मिनट का विश्राम दिया गया तथा प्रयोग की दूसरी अवस्था में पात्र 10 त्रि–अक्षरो की सूची B दो मिनट अधिगम हेतु दी गयी इसके तुरन्त बाद पृष्ठोन्मुखी अवराध हेतू सूची C दो मिनट अधिगम हेतु दी गयी तथा सूची B का प्रतयावहन करवाया गया दोनों अवस्थाओं में प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण कर उपयुक्त परिणाम निकाल दिए गए।

प्रदत्त विश्लेषण :–

प्रस्तुत प्रयोग पृष्ठोन्मुखी अवरोध के अध्ययन हेतु किया गया जिसमें प्रथम नियंत्रित अवस्था में पात्र ने 10 त्रि–अक्षरो की सूची A में से कुल .... त्रि–अक्षर याद रखे तथा प्रयोग की दूसरी प्रायोगिक अवस्था में पात्र ने सूची B के 10 त्रि–अक्षरो में से कुल .... त्रि–अक्षर याद रखे। जिसमें प्रथम अवस्था का प्रतिशत .... रहा तथा दूसरी अवस्था का प्रतिशत .... रहा।

तालिका क्रमांक – 04

प्रदत्त विश्लेषण

अवस्था	कुल त्रि–अक्षर	पात्र द्वारा दिया गया कुल सही हल	प्रतिशत
I नियंत्रित अवस्था	10		
II प्रायोगिक अवस्था	10		

परिणाम एवं विवेचना :–

प्रस्तुत प्रयोग का मुख्य उद्देश्य पृष्ठोन्मुखी अवरोध के प्रभाव को जानना था। जिसकी समस्या यह अध्ययन करना था कि क्या पृष्ठोन्मुखी अवरोध का कोई प्रभाव निष्पादन पर पड़ता है? इस हेतु यह उपकल्पना बनाई गई कि मध्यवर्ती अधिगम के फलस्वरूप उत्पन्न पृष्ठोन्मुखी अवरोध के कारण मूल अधिगम के प्रत्यावहन में कमी आएगी।

प्रथम नियंत्रित अवस्था में पात्र ने 10 त्रि–अक्षर की सूची A में से कुल .... त्रि–अक्षर याद किए तथा प्रयोग दूसरी प्रायोगिक अवस्था में पात्र ने 10 त्रि–अक्षरो की सूची B में से कुल

...........त्रि–अक्षर याद रखे तथा प्रथम अवस्था का प्रतिशत .... रहा तथा दूसरी अवस्था का प्रतिशत .... रहा।

विवेचना :– पात्र स्वयं अपने विवेक से परिणाम के अधार पर विवेचना लिखेंगे।

....

....

....

....

....

....

....

दण्ड चित्र क्रमांक – 01

नियंत्रित तथा प्रायोगिक अवस्था में सही प्रत्यावहित त्रि–अक्षरों का प्रतिशत